आत्मबोध से एक श्लोक

जिस प्रकार प्रभात द्वारा अन्धकार का नाश होने पर सूर्य प्रकट होता है,
उसी प्रकार ज्ञान द्वारा अज्ञान का नाश होने पर आत्मा का प्राकट्य होता है।

'आत्मबोध', आदि शंकराचार्य द्वारा संस्कृत भाषा में रचित ग्रन्थ है। वे एक महान विभूति थे जिन्होंने आठवीं शताब्दी में अद्वैत वेदान्त दर्शन को सुव्यवस्थित रूप दिया। इस ग्रन्थ में अड़सठ श्लोक हैं जिनमें यह वर्णन किया गया है कि आत्माज्ञान की प्राप्ति किस प्रकार की जाए।

आत्मबोध, ४३; अंग्रेज़ी भाषान्तर : स्वामी निखिलानन्द, *Self-Knowledge* [मयलापुर, मद्रास : श्री रामकृष्ण मठ, १९४७] पृ. २००।

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।